यूपी के सीतापुर में एक महिला ने निराश्रित पशुओं के संरक्षण में ऐसा बीड़ा उठाया कि घर की गृहस्थी को तिलांजलि देकर लाखों का फ्लैट ही खरीद डाला। 16 वर्षों से गौवंशों की सेवा करने में लगा परिवार गौमाताओं के लिए पौष्टिक भोजन के साथ फल-सब्जी और पर्याप्त दवाएं भी उपलब्ध करा रहा है। काष्ठा फाउंडेशन की संचालिका भावना सक्सेना बताती हैं कि 16 वर्ष पूर्व उन्हें नंदी चोटिल मिला, सड़क किनारे दो गौमाताएं भी थीं। अधिक जख्म होने के कारण कोई आगे नहीं बढ़ा, परिवार के साथ मिलकर सभी को घर के करीब ले आए, ताकि सेवा की जा सके। तमाम प्रयास के बाद भी उन्हें बचाया नहीं जा सका। तभी से मन बना लिया कि निराश्रित पशुओं के लिए छांव के साथ सारे इंतजाम करने हैं। भावना बताती हैं कि परिवार के सहयोग से पैसे इकट्ठा किए, घर की ज्वेलरी भी बेच दी, बाद में सड़क किनारे एक मकान खरीदा। फ्लैट में गौवंश के साथ 72 निराश्रितों का परिवार है। इनमें नियमित उपचार के साथ फल-सब्जियों का वितरण कराया जाता है। *-जीशान कदीर, सीतापुर*

बेजुबान पशुओं को मिली जुबां

निराश्रित पशु का अंतिम संस्कार करातीं भावना सक्सेना।

ठीक होने के बाद लोगों ने अपनाए गौवंश

भावना सक्सेना की पुत्री योशिता निजी कंपनी में कार्यरत हैं। कहती हैं कि ठीक होने के बाद कई गौवंशों को अपनाने के लिए शहर और उसके आसपास के परिवार आगे आए, बताती हैं कि सड़क पर निकलते समय घायल और बीमार पशुओं को लाना दिनचर्या में है। अब तक एक लाख से अधिक गौवंशों की सेवा की जा चुकी है।

भंडारा और अंतिम संस्कार के लिए परिवार एकजुट

भावना बताती हैं कि परिवार में पुत्र स्वरित और बहू निधि के अलावा पति मुकुल मोहन और पुत्री योशिता मिलकर गौवंशों और निराश्रित पशु (कुत्ता, बिल्ली आदि) के लिए भंडारे का आयोजन करते हैं, शहर और उसके आसपास हादसे का शिकार पशुओं के अंतिम संस्कार का जिम्मा भी दैनिक दिनचर्या में है।

नाम पुकारते ही दौड़ पड़ते हैं गौवंश

महिला और उनके बच्चों ने हर गौवंश का नाम रखा गया है। राजा, गणेश, गौरी, शंकर, गौरा, यशोदा, ममता, मंत्र, काली, रघु, भरत, आदि, छोटू, चंदू, बिल्लो सहित अन्य नामों से पुकारे जाने वाले गौवंश नाम सुनते ही दौड़ पड़ते हैं।

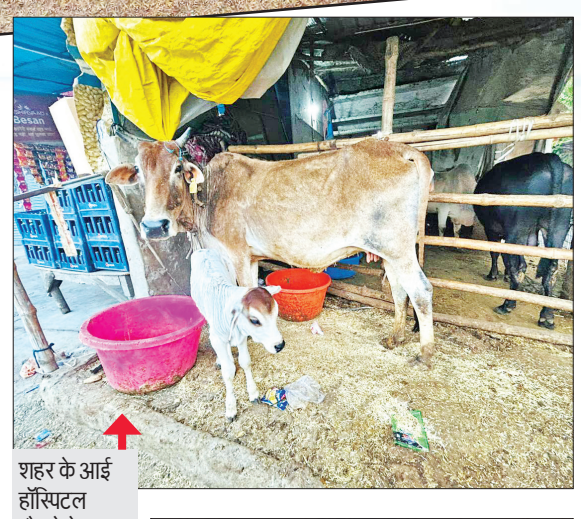
शहर के आई हॉस्पिटल चौराहे के नजदीक छांव के नीचे मौजूद गौवंश

कुत्ते के बच्चों का रेस्क्यू करतीं योशिता

अंजा रिंगग्रेन लोवेन

एक मानवतावादी महिला की कहानी

अंजा रिंगग्रेन लोवेन एक डेनिश मानवतावादी कार्यकर्ता हैं, जिन्हें नाइजीरिया में 'विष्ट बच्चे' (व्हिच चिल्ड्रेन) के रूप में आरोपित बच्चों को बचाने और उनकी पुनर्वास के लिए जाना जाता है। वे लैंड ऑफ होप नामक चैरिटी संगठन की संस्थापक हैं, जो पहले 'दिन नॉधजेल्प' (एक डेनिश नाम है, जिसका शाब्दिक अर्थ है-आपकी आपातकालीन सहायता) के नाम से जाना जाता था। उनका जन्म 4 सितंबर, 1978 को डेनमार्क के फ्रेडरिकशावन शहर में हुआ था। अंजा ने न केवल हजारों बच्चों की जिंदगियां बचाई हैं, बल्कि अफ्रीकी समाज में अंधविश्वासों के खिलाफ जागरूकता फैलाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनकी कहानी प्रेरणा का स्रोत है, जो दिखाती है कि एक व्यक्ति की दृढ़ इच्छाशक्ति कैसे विश्व स्तर पर बदलाव ला सकती है।

रूफिया खान
शिक्षिका

- **प्रारंभिक जीवन और शिक्षा-** अंजा का बचपन डेनमार्क के एक छोटे से शहर में बीता, जहां वे अपनी मां, बड़ी बहन और जुड़वां बहन के साथ रहती थीं। उनके पिता शराबी थे और मां की असमय मृत्यु ने उनके जीवन को गहरा आघात पहुंचाया। इससे वे अवसाद, चिंता और एनोरेक्सिया जैसी समस्याओं से जूझीं। 1998 में उन्होंने फ्रेडरिकशावन जिम्नेजियम से शिक्षा पूरी की। उसके बाद वे मध्य पूर्व की यात्रा पर गईं और इजरायल के एक किबुट्ज में रहीं, जहां उन्होंने सामुदायिक जीवन का अनुभव प्राप्त किया। 2001 में उन्होंने मर्स्क एयर के साथ स्टूअर्डेस (हवाई जहाज में महिला केबिन क्रू) के रूप में प्रशिक्षण लिया, लेकिन अपनी मां की टर्मिनल बीमारी के कारण नौकरी छोड़ दी। मां की मृत्यु के बाद वे खुदरा क्षेत्र में काम करने लगीं और आरहूस शहर में एक स्टोर मैनेजर बनीं। यह अवधि उनके जीवन की चुनौतियों से भरी थी, लेकिन इन्होंने ही उनकी मानवतावादी यात्रा की नींव रखी।
- **मानवतावादी कार्यों की शुरुआत-** अंजा का मानवतावादी सफर 2008 में तब शुरू हुआ, जब उन्होंने ब्रिटिश डॉक्यूमेंट्री 'व्हिच चिल्ड्रेन' देखी, जिसमें नाइजीरिया में जादू-टोने के आरोप में बच्चों पर होने वाले अत्याचारों को दिखाया गया था। इन बच्चों को परिवार और समाज द्वारा त्याग दिया जाता है, उन्हें यातनाएं दी जाती हैं या यहां तक कि जिंदा जला दिया जाता है। यह दृश्य अंजा के बचपन के सपने, अफ्रीका में काम करने के सपने को साकार करने के लिए प्रेरणा बना। 2009 में उन्होंने डेनिश नेशनल चर्च एड के लिए मलावी में तीन महीने का पर्यवेक्षक कार्य किया, जहां उन्होंने एक स्कूल के नवीनीकरण के लिए धन जुटाया। इसके बाद तंजानिया में एक स्कूल बनाने में मदद की। 2012 में, आरहूस में सेल्सपर्सन की नौकरी छोड़कर, उन्होंने डीआईएनओदहजेल्प की स्थापना की। अपनी सारी संपत्ति बेचकर उन्होंने नाइजीरिया में 'विष्ट बच्चों' को बचाने का संकल्प लिया। 2013 में वे पूर्णकालिक रूप से इस कार्य में लग गईं।
- **लैंड ऑफ होप की स्थापना -** 2014 में अंजा ने नाइजीरियाई कानून छात्र डेविड इम्मानुएल उमेम के साथ मिलकर अफ्रीकन चिल्ड्रेंस एड एजुकेशन एंड डेवलपमेंट फाउंडेशन की सह-स्थापना की। उन्होंने अकवा इबोम राज्य में तीन एकड़ जमीन खरीदी और इंजीनियर्स विदाउट बॉर्डर्स की मदद से लैंड ऑफ होप चिल्ड्रेंस सेंटर का निर्माण किया। यह केंद्र पश्चिम अफ्रीका का सबसे बड़ा ऐसा केंद्र है, जिसमें 100 बच्चों के लिए आवास, अस्पताल, व्यावसायिक स्कूल और कृषि भूमि शामिल है। यहां बच्चों को सुरक्षित वातावरण मिलता है, शिक्षा दी जाती है, स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की जाती है और अंधविश्वासों के खिलाफ जागरूकता अभियान चलाए जाते हैं। संगठन का उद्देश्य न केवल बचाव है, बल्कि बच्चों को उनके परिवारों में पुनर्स्थापित करना भी है। अंजा और उनकी टीम ने अब तक सैकड़ों बच्चों को बचाया है, जो पहले सड़कों पर भटकते या यातनाएं झेलते थे। वे स्थानीय समुदायों में शिक्षा के माध्यम से अंधविश्वासों को समाप्त करने पर काम करती हैं। केंद्र में रहने वाले 95 बच्चे अब स्कूल में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं और कई को उनके परिवारों में वापस लौटाया जा चुका है।

प्रमुख उपलब्धियां

अंजा के कार्यों को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जिसमें सम्मिलित हैं-

- 2016- ओओओएम मैगजीन द्वारा 'दुनिया की सबसे प्रेरणादायक व्यक्ति'।
- 2016- नील्स एबेसन मेडल।
- 2017- पॉल हैरिस फेलोशिप और होप अवॉर्ड।
- 2017- डेन ऑफ द ईयर के लिए नामांकन।
- 2023- रेड क्रॉस ह्यूमन राइट्स अवॉर्ड।

उन्हें दलाई लामा द्वारा 'हीरो' घोषित किया गया है। उनके कार्यों पर कई डॉक्यूमेंट्री भी बनी हैं, जैसे हेल्वेडेस हेल्टे, अंजा ओग हेक्सेबोर्नेने और हेक्सेनकिंडर इन नाइजीरिया (जर्मनी, 2018)। अंजा डेनमार्क की सबसे मांग वाली वक्ताओं में से एक हैं, जहां वे अपनी कहानी, बलिदान और नाइजीरिया के अंधविश्वासों पर व्याख्यान देती हैं।

जॉब का पहला दिन

सपनों से हकीकत तक का पहला कदम

जीवन के कालखंड में कुछ तिथियां स्वर्ण अक्षरों में अंकित हो जाती हैं। 25 मार्च 1995 का दिन मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण और अविस्मरणीय दिन है। इसी दिन मैंने सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया की अमायन शाखा, जिला भिंड (मध्य प्रदेश) में अपनी पहली नौकरी की शुरुआत की और अपने करियर की पहली औपचारिक दहलीज लांघी। एक 22 वर्षीय युवा के लिए यह दिन उत्साह, गर्व और हल्की-सी बेचैनी का अनूठा संगम था। यह केवल नौकरी का पहला दिन नहीं, बल्कि मेरे सपनों, संघर्षों और आत्मनिर्भरता की दिशा में पहला ठोस कदम था।

सुबह का समय अलग ही उत्साह और घबराहट से भरा हुआ था। मन में अनेक प्रश्न उठ रहे थे- कैसा होगा नया कार्यस्थल, कैसे होंगे सहकर्मी, क्या मैं अपनी जिम्मेदारियों को निभा पाऊंगा? इन सवालों के बीच एक आत्मविश्वास भी था, जो मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रहा था। प्रातः 10 बजे मैं अपने बड़े भाई अरविंद त्रिवेदी जी के साथ बैंक पहुंचा। उस समय मन में हजारों विचार उमड़ रहे थे। परिवार के संस्कार और बैंक की साख, दोनों का सम्मान मेरे कंधों पर था। मार्च का महीना बैंकिंग क्षेत्र में 'क्लोजिंग' का समय होता है, इसलिए वातावरण में विशेष व्यस्तता और ऊर्जा थी। जब मैंने शाखा प्रबंधक एस. सोनवणे जी को अपनी जॉइनिंग रिपोर्ट सौंपी, तो वह क्षण केवल पदभार ग्रहण करना नहीं था, बल्कि एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में समाज सेवा का संकल्प भी था। शाखा का वातावरण अनुशासन और कार्यकुशलता से परिपूर्ण था। वरिष्ठ कर्मचारियों आजाद जी, एस.एस. कुशवाहा और आनंद पाल ने मेरा गर्मजोशी से स्वागत किया। उनकी सरलता और सहयोगपूर्ण व्यवहार ने मेरी झिझक को काफी हद तक दूर कर दिया।

अजय त्रिवेदी
उप निदेशक युवा कल्याण

मुझे बैंक के विभिन्न कार्यों जमा-निकासी, खातों का संचालन और ग्राहकों से संवाद के बारे में बताया गया। लेजर, वाउचर और कैश ट्रांजैक्शन जैसी बैंकिंग प्रक्रियाओं से मेरा परिचय उसी दिन प्रारंभ हुआ। यह सब नया था, किंतु सीखने की ललक ने हर चुनौती को सरल बना दिया। अमायन जैसे ग्रामीण क्षेत्र में बैंक केवल वित्तीय संस्था नहीं, बल्कि लोगों के भरोसे का केंद्र होता है। पहले ही दिन मुझे समझ आ गया कि यहां काम केवल आंकड़ों का नहीं, बल्कि लोगों की उम्मीदों का है। उस समय सारा कार्य हस्तलिखित रजिस्टरों में होता था। एक छोटी सी चूक भी बड़ा अंतर उत्पन्न कर सकती थी, इसलिए एकाग्रता अत्यंत आवश्यक थी। मुझे मुख्यतः निरीक्षण और समझने का कार्य सौंपा गया। मैंने ध्यानपूर्वक हर प्रक्रिया को देखा और समझने का प्रयास किया। दोपहर में सहकर्मियों के साथ हुई अनौपचारिक बातचीत ने मुझे एक टीम का हिस्सा होने का एहसास कराया। उसी दिन यह भी समझ आया कि बैंक की नौकरी केवल 'दस से पांच' की ड्यूटी नहीं, बल्कि जनसेवा का माध्यम है।

सहकर्मियों का सहयोग मेरे लिए अत्यंत प्रेरणादायक रहा। उन्होंने धैर्यपूर्वक हर बात समझाई, जिससे मेरा आत्मविश्वास बढ़ा। दिन के अंत में जब सहकर्मी आनंद ने मुझे रहने और खाने की व्यवस्था में सहयोग का प्रस्ताव दिया, तो मन भावुक हो उठा। मुझे लगा कि मैंने अपने जीवन की एक नई यात्रा आरंभ कर दी है। इस दिन ने मुझे जिम्मेदारी, अनुशासन और समर्पण का महत्व सिखाया।

बाद में, 13 मई 1996 को उत्तर प्रदेश पीसीएस में चयनित होने के बाद, लगभग चौदह महीने की सेवा के पश्चात मैंने बैंक की नौकरी छोड़ दी। किंतु बैंक में बिताया गया पहला दिन आज भी मेरी स्मृतियों में ताजा है। उस दिन ने जो अनुभव और सीख दी, वह जीवन के हर पड़ाव पर मेरे साथ रही। सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया में बिताया गया समय मेरे व्यक्तित्व के निर्माण की नींव बना और उसी दिन ने मुझे आगे बढ़ने का साहस दिया।

सभ्यता की अमूल्य धरोहरों को संरक्षण की जरूरत

प्रत्येक वर्ष 18 अप्रैल को विश्व धरोहर दिवस मनाया जाता है। इसे विश्व विरासत दिवस, वर्ल्ड हेरिटेज डे तथा आधिकारिक रूप से अंतर्राष्ट्रीय स्मारक एवं स्थल दिवस (इंटरनेशनल डे फोर मोन्यूमेंट्स एंड साइट्स) कहा जाता है। यह दिवस मानवता की साझा सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक धरोहरों के संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से मनाया जाता है। इन स्थलों का संरक्षण यूनेस्को विश्व धरोहर सम्मेलन, 1972 के अंतर्गत किया जाता है, जिसे यूनेस्को सदस्य देशों द्वारा स्वीकार किया गया एक महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय समझौता माना जाता है। इस दिवस का मुख्य उद्देश्य विश्वभर के ऐतिहासिक स्मारकों, सांस्कृतिक स्थलों, पुरातात्विक अवशेषों, प्राकृतिक संपदाओं तथा मानव सभ्यता से जुड़ी अमूल्य विरासतों के संरक्षण के प्रति जनचेतना उत्पन्न करना है। वास्तव में धरोहर केवल पत्थरों से बनी इमारतें नहीं हैं, बल्कि वे हमारी संस्कृति, परंपरा, कला, ज्ञान, संघर्ष, इतिहास और सामूहिक पहचान की जीवंत प्रतीक हैं।

सुनील कुमार महला
लेखक

वर्तमान में 10 चयन मानदंड निर्धारित हैं, जिनमें से कम से कम एक को पूरा करना आवश्यक है। इनमें ऐतिहासिक महत्व, स्थापत्य कला, सांस्कृतिक प्रभाव, प्राकृतिक सौंदर्य, जैव विविधता तथा वैज्ञानिक महत्व जैसे पहलू सम्मिलित हैं। विश्व धरोहर मुख्यतः तीन प्रकार की होती है- पहली, सांस्कृतिक धरोहर, जिसमें स्मारक, मंदिर, मस्जिद, चर्च, किले, मूर्तियां, प्राचीन नगर, स्थापत्य कला, भाषा, संगीत, नृत्य और परंपराएं शामिल हैं। दूसरी, प्राकृतिक धरोहर, जिसमें पर्वत, नदियां, समुद्र, वन, वन्यजीव, जैव विविधता और अद्वितीय प्राकृतिक परिदृश्य आते हैं तथा तीसरी, मिश्रित धरोहर, जिनमें सांस्कृतिक और प्राकृतिक दोनों विशेषताएं विद्यमान होती हैं। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि यूनेस्को केवल स्थायी संरचनाओं या प्राकृतिक स्थलों को ही नहीं, बल्कि अमूर्त सांस्कृतिक विरासत को भी मान्यता देता है। भारत की योग परंपरा और कुंभ मेला इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

विश्व स्तर पर सबसे अधिक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों वाला देश इटली है, जिसके बाद चीन का स्थान आता है। भारत भी विश्व धरोहर स्थलों की दृष्टि से अग्रणी देशों में सम्मिलित है। यूनेस्को एक विशेष सूची 'वर्ल्ड हेरिटेज इन डेंजर' भी संचालित करता है, जिसमें उन स्थलों को शामिल किया जाता है, जो युद्ध, प्रदूषण, प्राकृतिक आपदा, अतिक्रमण, अत्यधिक पर्यटन, जलवायु परिवर्तन या उपेक्षा के कारण संकट में हों। यदि कोई स्थल संरक्षण मानकों का पालन न करे या उसका मूल स्वरूप गंभीर रूप से बदल जाए, तो उसे सूची से हटाया भी जा सकता है। उदाहरणस्वरूप ओमान का अरेबियन ओरिक्स अभयारण्य तथा जर्मनी की ड्रेसडेन एल्बे घाटी को सूची से हटाया जा चुका है। यहां यह उल्लेखनीय है कि अक्टूबर 2024 तक विश्वभर के 196 देशों में लगभग 1,223 विश्व धरोहर स्थल थे, जिनमें 952 सांस्कृतिक, 231 प्राकृतिक और 40 मिश्रित स्थल शामिल हैं। भारत जैसे प्राचीन और बहुसांस्कृतिक देश में इस दिवस का विशेष महत्व है। अप्रैल 2025 तक भारत में 43 विश्व धरोहर स्थल (34 सांस्कृतिक, 7 प्राकृतिक और 2 मिश्रित) तथा 62 स्थल संभावित सूची में सम्मिलित थे। भारत के प्रमुख धरोहर स्थलों में ताजमहल, आगरा किला, फतेहपुर सीकरी, अजंता-एलोरा गुफाएं, एलीफेंटा गुफाएं, खजुराहो समूह, सांची स्तूप, महाबोधि मंदिर, हम्पी, महाबलीपुरम, जंतर-मंतर, कुतुब मीनार, लाल किला, कोणार्क सूर्य मंदिर, नालंदा, भीमबेटका, सुंदरबन राष्ट्रीय उद्यान, काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान, पश्चिमी घाट तथा कंचनजंघा राष्ट्रीय उद्यान प्रमुख हैं।

विश्व धरोहर दिवस के अवसर पर प्रतिवर्ष एक विशेष थीम घोषित की जाती है। वर्ष 2026 की थीम है-'संघर्षों और आपदाओं के संदर्भ में जीवित विरासत के लिए आपातकालीन प्रतिक्रिया' रखी गई है। इसका आशय यह है कि युद्ध, संघर्ष और प्राकृतिक आपदाओं के समय केवल भवनों और स्मारकों की ही नहीं, बल्कि जीवित विरासतों-जैसे लोक परंपराएं, सामाजिक ज्ञान, सांस्कृतिक पहचान और समुदाय आधारित परंपराएं की भी त्वरित सुरक्षा सुनिश्चित की जाए। विश्व धरोहर दिवस केवल कैलेंडर की एक तिथि नहीं, बल्कि मानवता की साझा विरासत को सुरक्षित रखने का वैश्विक संकल्प है। यदि हम अपनी धरोहरों की रक्षा नहीं करेंगे, तो आने वाली पीढ़ियां अपने इतिहास, संस्कृति और पहचान से वंचित हो जाएंगी। अतः विकास के साथ-साथ विरासतों के संरक्षण, संवर्द्धन और सम्मान के लिए हमें दृढ़ संकल्पित होकर कार्य करना चाहिए।